ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

1857 Ã0 dh dkfUr d: uk;d vthe|Yyk [kk¡ dk ;ksxnku

डा0 सुरिन्दर कौर
एसो0 प्रोफेसर – इतिहास विभाग
गुरू नानक गर्ल्स पी0 ज़ी0कालेज
सुन्दर नगर,कानपुर

महापुरुष अपनी परिस्थितियों की उपज तथा भविष्य के द्रष्टा होते है। वे अपने व्यक्तित्व तथा कर्तत्व से लोगों के लिए प्रेरणा के स्रोत बन जाते है। भारतवर्भा में अनेक महर्भि, वैज्ञानिक व महापुरुष हुए है, जिन्होंने अपने देश के आर्दश को विश्व के समक्ष उपस्थित किया है। जब समाज में अव्यवस्था फैलती है, तब उनसे मुक्त करने के लिए विभूतियों का आविर्भाव होता है।

1857 की क्रान्ति भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना थी। इस क्रान्ति ने वर्षों से चले आ रहे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन को समाप्त कर दिया तथा भारतीय शासन को ब्रिटिश क्राउन के अधीन कर दिया गया। 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में लाखों भारतीयों ने अपनी आहुतियाँ दी थी तथा लाखों लोग बेघर हो गए थे। 1857 का यह संग्राम अंग्रेजों की कपट नीति के विरुद्ध एक भयंकर विस्फोट था।[1] कानपुर के परिक्षे़त्र में नाना साहब, तात्या टोपे, अजीमुल्ला खाँ, टिक्का खाँ, नर्तकी अजीजनबाई, कुमारी मैनाबाई, श्रीमती मुसद्दी, राजकुमारी वैजल, शान्ति देवी निगम, रुप कुमारी आगा, तारा अग्रवाल, गुलशन, गुलनार आदि ने सक्रिय भूमिका निभाई।[2]

राष्ट्र के स्वतंत्रता संग्रम में महान विभूतियों ने योगदान दिया और जिनकी इतिहास के पृभठों में ऐसी गणना नहीं हुई जिस प्रकार की होनी चाहिए थी, ऐसे ही महान नायक अजीमुल्ला खाँ थे। व्यक्ति वंश, जाति, रंगरुप आदि के चलते नहीं बल्कि अपने गुणों के चलते आदर पाता है। अजीमुल्ला खाँ 1857 की क्रान्ति के आधार स्तम्भों में से एक माने जाते है। उन्होंने नाना साहब के साथ मिलकर क्रान्ति की योजना तैयार की थी। नाना साहब ने अपने छोटे भाई बाला साहब व अजीमुल्ला खाँ के साथ भारत के प्रमुख तीर्थस्थलों का भ्रमण किया था और क्रान्ति का संदेश फैलाया। अजीमुल्ला खाँ भी नाना साहब के साथ बिठूर में रहते थे। यद्यपि उन्होंने नाना साहब की तरह तलवार नहीं उठाई थी, किन्तु इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि उन्होंने स्वत़ंत्रता के यज्ञ में भाग ही नहीं लिया था, बल्कि बड़ा योग भी दिया था।[3] वे बड़े बुद्धिमान, अनुभवी व बातचीत की कला में दक्ष थे। एक सच्चे देशभक्त व भाई की भाँति ही उन्होंने नाना साहब को उचित परार्मश देकर प्रोत्साहित किया था।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

अजीमुल्ला खाँ का जन्म साधारण मुस्लिम परिवार में हुआ था। उनके माता–पिता अत्यन्त निर्धन थे अतः होश सम्भालते ही वे अंग्रेजों के यहाँ बैरागिरी का काम करने लगे थे। कुछ दिन तक बैरागिरी का काम करने के बाद, उन्होंने एक अंग्रेज के यहाँ नौकरी कर ली थी। बड़ी कठिनाई से उनका कानपुर के पैटर्न स्कूल में नामांकन कराया गया। पढ़ने–लिखने में अत्यधिक मेधावी होने के कारण उनकी फीस माफ कर दी गई और उन्हें कुछ छात्रवृत्ति भी दी जाने लगी। अंग्रेज के यहाँ नौकरी करते हुए उन्होंने अंग्रेजी व फ्रेंच भाषा सीखी। गरीब होने पर भी उनके विचार उच्च थे। वे बैरागिरी अवश्य करते थे, परन्तु जीवन के क्षेत्र में आगे बढ़ने का विचार सदा मन में बनाये रखते थे। कुछ दिनों बाद नौकरी छोड़कर अजीमुल्ला खाँ कानपुर चले गए। उन्होंने कानपुर में अंगेजी शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वे अध्यापन कार्य करने लगे। वे बड़ी ईमानदारी व निष्ठा के साथ छात्रों को पढ़ाते थे। व्यक्ति अपने गुणों के चलते ही सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है।[4]

अजीमुल्ला खाँ का व्यक्तित्व बड़ा आकर्भाण था। वे अंगेजी धारा–प्रवाह बोलते थे। उनकी धारा–प्रवाह अंग्रेजी अंग्रेजों को बहुत अच्छी लगती थी। वे प्रायः पार्टियों में भी बुलाए जाते थे। बड़े–बड़े अंग्रेज अफसरों से उनकी जान–पहचान ही नहीं, बल्कि मित्रता भी थी। उनकी योग्यता व ईमानदारी की कहानी नाना साहब के कानों तक पहुँची। उन्होंने अजीमुल्ला खाँ को अपने दरबार में आमंत्रित किया। उनकी विद्वता से नाना साहब इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अजीमुल्ला खाँ को अपना मंत्री बना लिया। उनकी राय लेकर ही नाना साहब भावी योजना तैयार करते थे।

28 जनवरी 1851 को महाराज बाजीराव की मृत्यु हो गई।[5] इस समय नाना साहब की अवस्था 27 वर्ष के लगभग थी। लार्ड डलहौजी भारत का गर्वनर जनरल था। विस्तारवादी नीति का समर्थक होने के कारण उसने घोषणा की कि नाना साहब को बाजीराव का उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं किया जायेगा। अतः उन्हें बाजीराव को मिलने वाली करीब आठ लाख वार्षिक पेंशन नहीं दी जायेगी। नाना साहब ने प्रमाणित किया कि हिन्दू शास्त्र व न्यायशास्त्र के अनुसार दत्तक पुत्र को अपने पिता के समस्त अधिकार स्वतः प्राप्त हो जाते है। ब्रिट्रिश सरकार ने तर्क दिया कि बाजीराव ने अपने जीवन काल में परिवार के लिए काफी सम्पत्ति जमा कर ली है जिससे परिवार का भरण–पोभाण हो सकता है। अतः पेंशन की कोई जरुरत नहीं। कंपनी ने पेशवा की पेंशन तथा रमेल की जागीर उन्हें नहीं दी।[6] लार्ड कैनिंग ने अपनी इस सम्मति का आधार पूर्व गर्वनर जनरल लार्ड डलहौजी की निम्न दुराग्रही टिप्पणी को बनाया थाः

"33 वर्षों में बाजीराव ने ढ़ाई मिलियन स्टर्लिंग से अधिक पेंशन प्राप्त की थी। उनका न तो कोई पुत्र था और न कोई अन्य भार ही था। इसके अतिरिक्त उनके परिवार को 28

लाख रुपये प्राप्त हुए थे। अब उनका किसी प्रकार का दावा सरकार के विचाराधीन नहीं है। वे लोग भिक्षा या दान की माँग नहीं कर सकते, क्योंकि उनकी आय उनके लिए पर्याप्त है।"[7]

ब्रिट्रिश सरकार की इन कार्यवाहियों से वे हताश हो गए। उनके हृदय में अंग्रेजी शासन के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई। उन्होंने मुठ्ठी बाँधकर प्रतिज्ञा की, " जब तक अंग्रेजी शासन को समाप्त नहीं कर देंगे, चैन की सांस नहीं लेंगे। "[8] वे सारे देश को जगाने के लिए उपाय सोचने लगे। उन्होंने विद्रोह के मार्ग पर चलने से पूर्व एक बार प्रयत्न कर लेना ठीक समझा। गवर्नर जनरल द्वारा अपना आवेदन ठुकराए जाने पर उन्होंने कम्पनी के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स को एक ज्ञापन भेजने का निश्चय किया। उन्हें आशा थी कि उनके ज्ञापन पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जायेगा तथा पेशवा की पेंशन का कुछ भाग परिवार के भरण–पोषण के लिए अवश्य स्वीकृत होगा। उन्होंने बड़े परिश्रम से ज्ञापन तैयार करवाया। ज्ञापन के साथ किसी ऐसे विवेकशील व्यक्ति को भेजना आवश्यक था, जो उनकी तरफ से सशक्त पैरवी कर सके। नाना साहब ने पीराजी तथा अजीमुल्ला खाँ नामक अपने दो दूतों को अपील के लिए इंग्लैड भेजा।[9] पीराजी की जहाज में ही मृत्यु हो गई। अजीमुल्ला खाँ नाना साहब का ज्ञापन लेकर इंग्लैड गए। अपने आकर्षक व्यक्तित्व के कारण अजीमुल्ला ने लंदन में लोकप्रियता प्राप्त कर ली। उन्होंने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारियों से मिलकर नाना साहब के लिए वकालत की। कम्पनी के अंगेज अफसर अपने निर्णय को बदलने के लिए तैयार नहीं हुए। अन्त में उन्हें निराशा हाथ लगी। कंपनी के निर्देशक ने सुनाया कि "हम गर्वनर जनरल के निर्णय से पूर्णतया सहमत है कि बाजीराव दत्तक पुत्र को अपने पिता की पेंशन नहीं दी जा सकती ।"[10]

ब्रिट्रिश सरकार के जवाब ने अजीमुल्ला खाँ के हृदय को आघात पहुँचाया। अपनी असफलता से ऊबकर उन्होंने अपने लक्ष्य को नहीं त्यागा। वे कुछ समय तक और लंदन में रुक गए। यहाँ पर उनकी भेंट रंगो बापू जी से हुई जो सतारा के प्रतिनिधि बन कर आए थे (शिवाजी के वंशधर के प्रतिनिधि) कम्पनी ने सतारा के उत्तराधिकारियों को भी अधिकारों से वंचित कर दिया था। उन्होंने भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी में अपील की थी तथा अपील की पैरवी के लिए रंगो बापूजी को अपने प्रतिनिधि के रुप में इंग्लैड भेजा था। उन्हें भी कम्पनी की सरकार ने वही उत्तर दिया जो अजीमुल्ला खाँ को दिया गया था। रंगो बापू जी के हृदय को भी आघात पहुँचा। उन्होंने भी अजीमुल्ला खाँ की तरह अनुभव किया कि जब तक अंगेज भारत में रहेंगे, भारतीयों को न्यायपूर्ण अधिकार प्राप्त नहीं हो सकेंगे। दोनो के विचार एक समान थे। दोनो आपस में गुप्त मंत्रणा करते कि अब अंगेजो से याचना नहीं करनी चाहिए। दोनो ने लंदन के कमरों में बैठकर चिंतन के पश्चात् भावी क्रान्ति की योजना बनाई। रंगो बापूजी सतारा वापस आ गए परन्तु अजीमुल्ला खाँ इंग्लैड में ही रुके रहे। वे अंग्रेज अफसरों

के घर में जाकर मुलाकात करते थे। उन्होंने अपनी डायरी में लिखा है कि " वहाँ के उच्च घरानों की स्त्रियाँ उन्हें हिन्दुस्तान का कोई नवाब समझकर आकर्षित होती थी। उन्होंने महारानी विक्टोरिया से भी मिलने का उल्लेख किया है।[11] कई महीने तक इंग्लैड में रहने के पश्चात वे इटली, रुस और तुर्किस्तान भी गए तथा वहाँ अधिकारियों से मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध सहायता माँगी। उन्होंने क्रीमिया युद्ध स्थल का भी निरीक्षण किया। भारत लौटने के पश्चात् वे क्रान्ति की योजना बनाने लगे।

नाना साहब व अजीमुल्ला खाँ दोनो ने सम्पूर्ण भारत में विद्रोह की आग जलाने के लिए योजना तैयार की। दोंनो ने दिल्ली में बहादुरशाह जफर, मलिका जीनत महल व अन्य लोगों से भेंट की तथा अंबाला, लखनऊ व कालपी होते हुए बिठूर लौट आए। नाना साहब ने राजाओं व नवाबों को पत्र लिखने के पश्चात् अजीमुल्ला खाँ के साथ तीर्थयात्री के रुप में सम्पूर्ण देश की यात्रा की। 4 जून को कानपुर में क्रान्ति हुई जिसका नेतृत्व नाना साहब ने किया, इस युद्ध में अजीमुल्ला खाँ उनके साथ रहे तथा अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। 17 जुलाई को पुनः कानपुर में विद्रोह हुआ। अन्त में कम्पनी की सेना ने कानपुर पर अपना पुनः अधिकार कर लिया।

क्रान्ति के असफल होने पर अजीमुल्ला खाँ कुछ क्रान्तिकारियों के साथ नेपाल की तराई की ओर चले गए। नेपाल का राजा राणा जंग बहादुर अंगेजों का मित्र था। अक्टूबर माह में भूखल नामक स्थान पर उनकी मृत्यु हो गई। हम अजीमुल्ला खाँ के बलिदान को कभी नहीं भूल सकते।

I UnHK

1. एस0 बी0 चौधरी : थ्यौरीज ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, 1857, कलकत्ता, 1965. पृ0 388.
2.वी0 डी0 सावरकर : दि इण्डियन वार ऑफ इंडिपेंडेस, नई दिल्ली, 1970. पृ0 260–264
3.एस0 के0 वाभर्णेय : नाना साहब, दिल्ली, सन्मार्ग साहित्य परिभाद, 2006. पृ0 48.
4.डा0 भरत मिश्रा : 1857 की क्रान्ति उसके प्रमुख क्रान्तिकारी, नई दिल्ली, राधा पब्लि0, 2008. पृ0 156.
5.डा0 राजनारायण पाण्डेय : श्रीमन्त नाना साहब, कानपुर, आशीभा प्रकाशन, 2008, पृ0 29.
6.श्री लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी व श्री नारायणप्रसाद अरोड़ाःकानपुर का इतिहास, भाग–1. कानपुर; कानपुर इतिहास समिति, 2003, पृ0 71.
7. इण्डियन कान्स्टीट्यूशनल डाकूमेन्ट खण्ड 1, पृ0 347, नाना साहब पेशवा, पृ0 141–142 पर उद्धृत.
8. एस0 के0 वाभर्णेय : नाना साहब , दिल्ली , सन्मार्ग साहित्य परिभाद , 2006, पृ0 54.
9. श्री लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी व श्री नारायण प्रसाद अरोड़ा : कानपुर का इतिहास , भाग 1, कानपुर इतिहास समिति , 2003 , पृ0 71.
10. डा0 भरत मिश्रा : 1857 की क्रान्ति और उसके प्रमुख क्रान्तिकारी , नई दिल्ली , राधा पब्लिकेशन्स , 2008 , पृ0 156.
11. डा0 राजनारायण पाण्डेयः श्रीमन्त नाना साहब , कानपुर, आशीभा प्रकाशन, 2008. पृ0 30.